

# डॉ. क्रेग कीनर, मैथ्यू व्याख्यान 4, परिचय और मैथ्यू 1

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह मैथ्यू की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 4, परिचय और मैथ्यू 1 है।

मैथ्यू का सुसमाचार विशेष रूप से मसीहाई यहूदी विश्वासियों, यहूदी ईसाइयों और येशुआ, यहूदी मसीहा, यीशु के यहूदी अनुयायियों को संबोधित किया गया था।

लोग इसकी सही तारीख को लेकर बहस करते हैं। पापियास का कहना है कि मैथ्यू ने सबसे पहले लिखा था, जाहिर तौर पर यह पहले की तारीख के लिए तर्क होगा। लेकिन मैथ्यू का हमारा वर्तमान सुसमाचार अपने वर्तमान स्वरूप में, मुझे लगता है कि यह संभवतः वर्ष 70 के बाद का समय था।

हालाँकि गॉस्पेल की डेटिंग के तर्क किसी भी तरह से निर्णायक नहीं हैं। वे अक्सर पॉल के कई पत्रों से काफी भिन्न होते हैं। तो, आपके पास तारीखों पर व्यापक बहस है।

महान आयोग मैथ्यू के सुसमाचार का चरमोत्कर्ष और निष्कर्ष है। प्राचीन कार्य कभी-कभी किसी कार्य के अंत में अपने प्रमुख विषयों का सारांश प्रस्तुत करते थे। अक्सर, वे शुरुआत में ही उनका परिचय करा देते थे।

अधिनियम 1:8 जैसा कार्य, यह कुछ प्रमुख विषयों का परिचय देता है। लेकिन मैथ्यू का सुसमाचार विशेष रूप से उसके सुसमाचार के अंत में विभिन्न विषयों को एक साथ जोड़ता है। और वह हमारे पास महान आयोग में है।

मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि मैथ्यू के गॉस्पेल का यह निष्कर्ष वास्तव में कुछ प्रमुख विषयों को एक साथ कैसे जोड़ता है, मैथ्यू के गॉस्पेल में इनमें से कुछ विषयों का सर्वेक्षण करने के एक तरीके के रूप में। महान आयोग में अंतर-सांस्कृतिक मंत्रालय, इंजीलवाद और जिसे हम ईसाई शिक्षा कह सकते हैं, शामिल है। मैथ्यू 28.19 और 20.

आपके पास तीन अधीनस्थ सहभागी उपवाक्यों से घिरी एक अनिवार्यता है। या हम कह सकते हैं कि यह एक आदेश है जिसे तीन तरीकों से कार्यान्वित किया जाता है। आदेश शिष्य बना रहा है।

हम ऐसा जाकर, बपतिस्मा देकर और शिक्षा देकर करते हैं। अब चल रहे भाग को केवल पूर्वकल्पित किया जा सकता है, लेकिन यह वहां बताया गया है। लेकिन इसका तात्पर्य यह है कि हम जिनके पास जा रहे हैं वे राष्ट्र हैं क्योंकि हम राष्ट्रों को शिष्य बना रहे हैं।

इसलिए, अच्छी खबर को सभी देशों तक पहुँचाया जाना चाहिए। खैर, क्या मैथ्यू के सुसमाचार में यह एक नया विचार है, या क्या वह कुछ समय से हमें इसके लिए तैयार कर रहा है? अच्छा चलो देखते हैं। सुसमाचार की शुरुआत यीशु के पूर्वजों से होती है।

और वैसे, कृपया मेरी तस्वीरों को क्षमा करें। मुझे जितनी भी तस्वीरें मुफ्त में मिल सकीं मैंने लीं। उस समय वे स्वतंत्र थे।

तो वैसे भी, वे सभी बिल्कुल प्रासंगिक नहीं हैं। लेकिन वैसे भी, प्राचीन वंशावली में आमतौर पर केवल पुरुष ही शामिल होते थे। कृपया मुझे बुरी तरह से न देखें जैसे कि मैं महिलाओं को छोड़ दूँगा, लेकिन तब उन्होंने यही किया था।

प्राचीन वंशावली में आम तौर पर केवल पुरुष शामिल होते थे, लेकिन मैथ्यू ने चार महिलाओं के नाम बताए। अच्छा, वे कौन हैं और कहाँ से हैं? तामार, राहब, रूथ और ऊरिय्याह की विधवा, जिसे हम 2 शमूएल से जानते हैं, बतशेबा थी। अच्छा, वे कहाँ से हैं? तामार स्पष्टतः कनान से था।

उसकी कहानी उत्पत्ति 38 में बताई गई है जहां वास्तव में भगवान यहूदा को पश्चाताप करने में मदद करने के लिए उसका उपयोग करते हैं। लेकिन वह जाहिर तौर पर एक स्थानीय कनानी थी। राहब, ठीक है, आप उसकी कहानी यहोशू की किताब से जानते हैं।

वह कहाँ से है? वह जेरिको से है। और वास्तव में, जोशुआ की किताब के एक संदर्भ में उसकी कहानी सैंडविच है। यह सीधे अचन की कहानी से सटा हुआ है।

आकान यहूदा के गोत्र से था और आप उम्मीद कर सकते हैं कि आकान एक अच्छा आदमी होगा, लेकिन आकान ने जेरिको से लूटी गई लूट को अपने तंबू के नीचे छिपा दिया था। इसके विपरीत, राहाब ने जासूसों को अपनी छत पर छिपा दिया। उसके कृत्य के कारण उसके परिवार को मुक्ति मिली और उसके लोगों को धोखा मिला।

हालाँकि, आकान ने अपने लोगों को धोखा दिया और उसके परिवार को नष्ट कर दिया। प्रत्येक मामले में, परिवार रहस्य में रहा होगा और इसलिए उन्होंने ज़िम्मेदारी साझा की। रूथ, ठीक है, हम रूथ की किताब से जानते हैं कि वह कहाँ है।

वह मोआबी थी। व्यवस्थाविवरण 23:3 कहता है कि कोई अम्मोनी या मोआबी 10वीं पीढ़ी के प्रभु की मंडली में प्रवेश नहीं करेगी, लेकिन उसका प्रवेश में स्वागत था क्योंकि वह प्रभु, इस्राएल के परमेश्वर, रूथ 1.16 से जुड़ी हुई थी। और फिर अंततः हमारे पास बतशेबा है, लेकिन उसे उसके नाम बतशेबा से नहीं दिया गया है। उसे उसकी पत्नी कहा जाता है, उसकी जो पत्नी थी, जो ऊरिय्याह की विधवा थी, उसे हिती ऊरिय्याह कहा जाता है।

बतशेबा स्वयं यहूदा के गोत्र से रही होगी। मुझे लगता है कि 2 सैमुएल में इसके कुछ सबूत हैं, लेकिन उसकी शादी एक हिती परिवार में हुई थी। और इसलिए, ये चारों महिलाएं या तो गैर-यहूदी हैं या उनका बहुत मजबूत गैर-यहूदी संबंध है।

तो, राजा डेविड के तीन पूर्वजों, राजा सोलोमन की माँ, सभी के ये गैर-यहूदी संबंध थे। और फिर भी यहूदी वंशावली का उद्देश्य किसी के इज़राइली वंश की शुद्धता को रेखांकित करना था। मैथ्यू विशेष रूप से जोसेफ के माध्यम से यीशु के शाही वंश के विपरीत कार्य करता है।

ठीक है, आप देखें कि मैथ्यू अध्याय दो में तीन समूह कौन हैं, और हम वापस आएं और इनमें से कुछ को और अधिक विस्तार से करेंगे जैसे हम मैथ्यू को अधिक विस्तार से करते हैं, लेकिन केवल अन्यजातियों या सभी राष्ट्रों के इस विषय का पता लगाते हैं। खैर, तीन नए पात्र या पात्रों के समूह जो पहले से ही अध्याय एक में मौजूद नहीं थे, वे मैगी हैं जो फारसी राजा, हेरोदेस, यहूदियों के राजा से थे, हालांकि वह एक एडोमाइट था, जन्म से एक इडुमी, लेकिन वे पहले बलपूर्वक यहूदी धर्म में परिवर्तित कर दिया गया था, और शास्त्रियों और कुलीन पुजारियों को, जो शायद अपने समय के पादरी और मदरसा प्रोफेसरों की तरह ही रहे होंगे। खैर, भगवान अक्सर हमें आश्चर्यचकित करते हैं।

ज्योतिषियों के लिए सज़ा मौत थी, लेकिन वे पूजा करने आए थे। खैर, यह मैगी के बारे में सच था। अब, हेरोदेस महान के बारे में क्या? पुराने नियम के किस राजा ने नर बच्चों को मार डाला? यह फिरौन था।

तो यहाँ आपके पास ऐसे लोग हैं जिन्हें बुतपरस्त, बाहरी माना जा सकता है, जो इसराइल के राजा की पूजा करने आते हैं, और आपके पास इसराइल का राजा एक बुतपरस्त की तरह काम कर रहा है। हम इसके बारे में बाद में और अधिक विस्तार से जानेंगे, लेकिन मैथ्यू अध्याय तीन और चार में, हमारे पास इस विषय का भी संकेत है। जॉन बैपटिस्ट भीड़ को उपदेश दे रहा है।

यह मत सोचो कि तुम अपने आप से कह सकते हो, हमारा पूर्वज इब्राहीम है। मैं तुम से कहता हूँ, परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। अध्याय चार, जब यीशु स्थानांतरित होता है, मैथ्यू कहता है कि यह अन्यजातियों के गलील का जिक्र करते हुए भविष्यवक्ता यशायाह की भविष्यवाणी को पूरा करता है।

मैथ्यू अध्याय आठ एक रोमन सेंचुरियन की बात करता है, तकनीकी रूप से शायद वह रोमन नहीं है। वह संभवतः जातीय रूप से सीरियाई मूल का था, लेकिन उसने रोम की सेवा की, और इसलिए वह इस कथा में रोम के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है। और यह आदमी विश्वास से काम करता है।

यीशु अपने विश्वास को स्वीकार करते हैं और कहते हैं, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि बहुत से लोग पूर्व से मागी की तरह, और पश्चिम से रोमियों की तरह आएं। राज्य में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ वादा किए गए भोज में बहुत से लोग आएं और एक मेज पर बैठेंगे। इसके अलावा, अध्याय आठ में, जहां यीशु अन्यजातियों के राक्षसों को ठीक करते हैं, यह मुख्य रूप से अन्यजातियों का क्षेत्र है, क्योंकि वे वहां सूअर पाल रहे हैं, और वहां कई यहूदी लोग रहते थे, लेकिन यह मुख्य रूप से अन्यजातियों का क्षेत्र है।

अध्याय 10, यीशु कहते हैं कि जब आप उस घर या शहर से बाहर निकलें तो अपने पैरों से धूल झाड़ लें, जब वह शिष्यों को प्रचार करने और चंगा करने के लिए गलील भर में भेजते हैं। यदि वे आपकी बात नहीं सुनते तो अपने पैरों की धूल झाड़ दीजिये। खैर, बहुत रूढ़िवादी यहूदी लोग

कभी-कभी पवित्र भूमि पर लौटते समय या मंदिर जैसे पवित्र स्थान पर आते समय क्या करते हैं, इससे उनके पैरों से अपवित्र धूल हट जाएगी।

और इसलिए यहाँ, यीशु के शिष्यों को इन गैलीलियन कस्बों के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसे कि वे मूर्तिपूजक हों। और इसीलिए वह आगे कहता है, मैं तुम से सच कहता हूँ, न्याय के दिन सदोम और अमोरा के लिये उस नगर की अपेक्षा अधिक सहनीय, अधिक सहने योग्य होगा। अध्याय 11 कहता है कि न्याय के दिन तुम्हारी अपेक्षा सूर और सैदा के लिये यह अधिक सहने योग्य होगा।

और हे कफरनहूम, जो आश्चर्यकर्म तुम में किए गए, यदि वे सदोम में किए गए होते, तो वह आज तक बना रहता। अध्याय 12, यीशु कहते हैं कि नीनवे और शीबा न्याय के दिन के लिए उनके अपने लोगों की तुलना में बेहतर तैयार थे। और वह इस बात को रेखांकित कर रहा है कि अधिक से अधिक ज्ञान, और सत्य के प्रति अधिक से अधिक संपर्क, ईश्वर के समक्ष अधिक जिम्मेदारी लाता है।

इसलिए, जिन स्थानों पर सुसमाचार का प्रसार अधिक हुआ है, यदि वे सत्य को प्राप्त करने से चूक जाते हैं तो न्याय और भी अधिक होगा। जबकि ईश्वर अक्सर उन लोगों पर अपने उपहार लुटाता है जिनके पास वह पहुंच रहा है जिन्हें पहले कभी सुनने का मौका नहीं मिला। और हम इसे पहले की कई चमत्कारिक कहानियों में देखते हैं, हालाँकि भगवान हर जगह हर किसी से प्यार करते हैं।

और इसलिए, हम देखते हैं कि अध्याय 15 में, हमारे पास एक कनानी महिला है। मार्क में, वह एक सिरो -फोनीशियन महिला है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह ग्रीक है। खैर, यूनानी सिरो -फोनीशिया के शासक नागरिक वर्ग थे।

सिरो -फोनीशिया उत्तर में फोनीशियन क्षेत्र था, लिबो-फोनीशिया के विपरीत, जो उत्तरी अफ्रीका में कार्थेज के आसपास के क्षेत्र में था। मैथ्यू उसे कनानी क्यों कहता है? खैर, कनानियों, जब वे विस्थापित हुए, तो उनमें से बहुत से लोग इस क्षेत्र में चले गए। तो, वह कनानी के प्रकार में भी फिट बैठती है।

और याद रखें कि मैथ्यू के सुसमाचार की शुरुआत में कुछ कनानी महिलाएँ थीं। तुम्हारे पास तामार और राहब थे। तो अब वह आपको अपने समय की एक कनानी महिला की कहानी बता रहे हैं।

यदि कोई ऐसा समूह था जिससे यहूदी लोग लगभग उतनी ही नफरत करते थे जितनी वे रोमनों से करते थे, या उनमें से कई लोग नफरत करते थे, तो वह कनानी लोग थे। तो, इस पहलू को कहानी में डालना उसे मुद्दे पर ले जाता है। खैर, यह महिला उस संभ्रांत वर्ग का हिस्सा है जो एक तरह से दूसरे लोगों के बच्चों के मुँह से रोटी छीन रही है।

यूनानी सिरो -फोनीशिया के शासक नागरिक वर्ग थे। इसके अलावा, वह उन शहरों में से एक में है, जो ग्रामीण इलाकों पर निर्भर था। इसलिए, वह लंबे समय तक एक विशिष्ट पद पर रहीं।

अब उसे याचना की स्थिति में यीशु के पास आना होगा और यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में स्वीकार करना होगा, वह कहती है, वही असली राजा है। और यीशु ने उसका अनुरोध स्वीकार कर लिया और उसके विश्वास की प्रशंसा की। अध्याय 16, पतरस ने कैसरिया फिलिप्पी में यीशु का अंगीकार किया।

यह एक बुतपरस्त शहर था जो जादू-टोने और बुतपरस्त पूजा के लिए जाना जाता था। मूल रूप से, इसे वहां के देवता पान के कुटी के नाम पर पनियास कहा जाता था, लेकिन फिर सम्राट और फिलिप के सम्मान में इसका नाम बदलकर कैसरिया फिलिपी कर दिया गया। यीशु, यहीं पर उसने पतरस से कबूल कराया।

वह कहता है, तू क्या कहता है कि मैं कौन हूँ? यहीं पर पीटर यह स्वीकारोक्ति करता है कि यीशु कौन है। अध्याय 24 में, यीशु कहते हैं, आप कई संकेत देखेंगे जो वास्तव में अंत के संकेत नहीं होंगे, लेकिन यही वह चीज़ है जो आपको बताएगी कि अंत आ रहा है। राज्य के बारे में खुशखबरी सभी लोगों के बीच प्रचारित की जानी चाहिए, और फिर अंत आ जाएगा।

अध्याय 25 में, राष्ट्रों का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाता है कि वे यीशु के एजेंटों को कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। मेरे भाइयों और बहनों, आपने इनमें से जो कुछ भी किया है। खैर, मैथ्यू के सुसमाचार में अन्यत्र यीशु के भाई और बहन कौन हैं? जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।

यीशु कहते हैं, तुम्हारा एक पिता स्वर्ग में है, मत्ती 23, तुम सब हमारे भाई-बहन हो। इसलिए अध्याय 28 में भी, कब्र की स्त्रियों से यीशु ने कहा, जाओ, मेरे भाइयों से कहो। तो, यीशु के भाई और बहनें शिष्य हैं, यीशु के अनुयायी हैं, और यीशु उन्हें राष्ट्रों के बीच राज्य की खुशखबरी का प्रचार करने के लिए भेजते हैं।

और फिर राष्ट्रों का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाता है कि क्या उन्होंने उन्हें खाना खिलाया, क्या उन्होंने उन्हें पानी पिलाया, इत्यादि। खैर, यही हम मैथ्यू अध्याय 10 में देखते हैं। यीशु अपने शिष्यों को बाहर भेजता है और जो कोई उन्हें प्राप्त करता है, उनका आतिथ्य करता है, और उन्हें अंदर ले जाता है, वह धन्य हो जाता है।

यदि वे ऐसा नहीं करते, तो अपने पैरों से धूल झाड़ दो। और अध्याय के अंत में, यीशु कहते हैं, यदि वे तुम्हें ग्रहण करते हैं, तो वे मुझे भी ग्रहण करते हैं। और यदि वे तुम्हें मेरे नाम पर एक कप ठंडा पानी भी देते हैं, तो उन्होंने मुझे प्राप्त कर लिया है।

तो यहाँ यीशु अपने दूत, अपने एजेंट भेजते हैं। जब हम उन लोगों तक खुशखबरी पहुंचाते हैं जिन्होंने इसे पहले कभी नहीं सुना है, तो हम इस भूमिका को पूरा कर रहे हैं और हम राष्ट्रों तक खुशखबरी पहुंचाने की इस वादा की गई अंतिम समय की भूमिका का हिस्सा पूरा कर रहे हैं। और फिर अंततः आप अध्याय 27 पर आते हैं, क्रूस पर चढ़ने के बाद यीशु को ईश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार करने वाले पहले लोग।

यह निष्पादन दस्ता है। मार्क ने सेंचुरियन का उल्लेख किया है, मैथ्यू का कहना है कि सेंचुरियन और जो लोग उसके साथ थे, वे सभी यीशु को ईश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार करते हुए इसमें शामिल हुए। तो, हमारे पास यह विषय है जो सुसमाचार के माध्यम से चलता है।

जब आप मैथ्यू अध्याय 28 पर आते हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यह बस उस विषय का चरमोत्कर्ष है जो हमेशा से रहा है। तो, मैथ्यू 28, जा रहा है, बपतिस्मा भी दे रहा है।

यह कुछ ऐसा नहीं है जो बपतिस्मा के संदर्भ में मैथ्यू के सुसमाचार में चलता है, लेकिन कुछ ऐसा है जो वहां चलता है जो इस विचार से संबंधित है। बपतिस्मा अध्याय 3 में पश्चाताप के कार्य के रूप में प्रकट होता है। जब जॉन बैपटिस्ट उपदेश देते हैं, तो स्वर्ग के राज्य के लिए पश्चाताप निकट है।

और फिर जब लोग पश्चाताप के इस बपतिस्मा के प्रकाश में पश्चाताप कर रहे थे, तो उन्हें बपतिस्मा दिया गया। अब जब अन्यजाति यहूदी धर्म में परिवर्तित हो गए तो यहूदी लोगों ने अन्यजातियों को बपतिस्मा दिया। और यह यहाँ महत्वपूर्ण है क्योंकि जॉन बैपटिस्ट यहूदी लोगों के साथ इस प्रकार की धुलाई का उपयोग कर रहा है।

फिर, अपने आप से यह कहने की न सोचें कि हम इब्राहीम की संतान हैं, लेकिन हम सभी को समान शर्तों पर भगवान के पास आना होगा। हम सभी को पश्चाताप करना होगा। और इस मामले में, धुलाई, औपचारिक धुलाई कुछ ऐसी चीज़ थी जिसे पहले से ही इस तरह समझा गया था।

नियमित प्रकार की धुलाई होती थी, लेकिन यह एक ही बार की सभी प्रकार की धुलाई, जो ईश्वर की ओर मुड़ने का संकेत देती थी, कुछ ऐसी थी जो आम तौर पर अन्यजातियों के साथ की जाती थी। लेकिन ध्यान दें कि एक संदेश है जो जॉन के बपतिस्मा के साथ जाता है। स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है, इसलिये मन फिराओ।

खैर, उस संदेश में पूरे सुसमाचार में निरंतरता है। वह अध्याय 3 और पद 2 में जॉन बैपटिस्ट है। अध्याय 4 और पद 17 में यीशु वही संदेश देते हैं। यह उनके संदेश का सारांश है।

स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है, इसलिये मन फिराओ। अध्याय 10 और पद 7, जैसे यीशु शिष्यों को भेजते हैं, वे कहते हैं, और जैसे ही आप प्रचार करते हुए कहते हैं, स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। लेकिन तब से बदलाव आया है।

परिवर्तन यह नहीं है कि अब हम स्वर्ग के राज्य का प्रचार नहीं करते। परिवर्तन यह है कि अब हमें इस बात की स्पष्ट समझ है कि स्वर्ग के राज्य में राजा कौन है। तो, मैथ्यू अध्याय 28 में, यह केवल बपतिस्मा देने के बारे में नहीं कहता है, जैसे कि जॉन द बैपटिस्ट जो कर रहा था उसे जारी रखना, बल्कि यह निर्दिष्ट करता है कि बपतिस्मा के साथ अब एक और विशेष संदेश जुड़ा हुआ है।

हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देते हैं। अर्थात्, अब हम उस राजा के स्वभाव को पूरी तरह से समझते हैं जिसे हम परमेश्वर के राज्य में घोषित करते हैं। मैथ्यू के पूरे सुसमाचार में, हम यीशु के अधिकार को देखते हैं।

उसका बीमारी पर, आत्माओं पर, तूफानों पर अधिकार है। मैथ्यू अध्याय 9 में किसी को चंगा करते समय, यीशु कहते हैं, मनुष्य के पुत्र के पास पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने का अधिकार है। लेकिन यहाँ अध्याय 28, श्लोक 18 में, यीशु कहते हैं, स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है।

स्वर्ग का राज्य वास्तव में मनुष्य के पुत्र, यीशु का है। और फिर पद 19 में, आप पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देते हैं। यहूदी लोग समझते थे कि पिता एक ऐसा नाम था जिसे वे अक्सर ईश्वर के लिए प्रार्थना में इस्तेमाल करते थे।

आत्मा, उन्होंने वास्तव में आत्मा को एक विशिष्ट व्यक्ति के रूप में नहीं देखा जिस तरह हम त्रिमूर्ति में विश्वास करते हैं, लेकिन उन्होंने आत्मा को भगवान के एक पहलू के रूप में देखा। उन्होंने आत्मा को निश्चित रूप से दिव्य के रूप में देखा। यीशु को पिता और आत्मा के बीच के पुत्र के रूप में नाम देना स्पष्ट रूप से यीशु को दिव्य के रूप में दर्शाता है।

और इसीलिए यीशु श्लोक 20 में कहते हैं, मैं युग के अंत तक तुम्हारे साथ हूँ। यहूदी विचारधारा में, एकमात्र ईश्वर ही था जो एक साथ सबके साथ रह सकता था। केवल ईश्वर ही सर्वव्यापी है।

वास्तव में, बाद के रब्बियों के पास ईश्वर का एक नाम था। उन्होंने उसे माकोम, स्थान कहा, जिसका अर्थ सर्वव्यापी है। और मैथ्यू के सुसमाचार में यह कोई नई बात नहीं है।

यह कुछ ऐसा है जिसके लिए वह हमें भी तैयार कर रहा है। मैथ्यू 1.23, उसे इमैनुएल कहा जाना चाहिए, जो हमारे साथ भगवान है। यीशु पहले से ही अपने अवतार में थे।

और मैथ्यू 18.20, यीशु कहते हैं, जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूँ। खैर, प्राचीन काल से एक यहूदी कहावत थी कि जहां दो या तीन टोरा के अध्ययन के लिए, भगवान के कानून के अध्ययन के लिए इकट्ठे होते हैं, वहां भगवान की शकीना, उनके बीच भगवान की उपस्थिति होती है। यीशु ईश्वर की उपस्थिति होने का दावा कर रहे हैं।

और यहाँ यीशु ने निष्कर्ष निकाला, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, यहाँ तक कि युग के अंत तक भी। और मैं हमेशा सोचता था, ठीक है, आप जानते हैं, जॉन के सुसमाचार में आयोग में, यीशु कहते हैं, आत्मा को प्राप्त करो जैसे पिता ने मुझे भेजा है, इसलिए मैं तुम्हें भेजता हूँ। ल्यूक के अंत और अधिनियमों की शुरुआत में आयोग में, वह उन्हें आत्मा का वादा करता है ताकि वे बाहर जा सकें और वैश्विक मिशन के इस कार्य को कर सकें।

लेकिन यहां मैथ्यू में, मैंने सोचा, ठीक है, वह शक्ति के बारे में बात नहीं करता है, लेकिन वह ऐसा करता है क्योंकि वह कहता है, मैं तुम्हारे साथ हूँ। इस कार्य को पूरा करने में वह हमारे साथ रहेंगे। तो, महान आयोग जाने की बात करता है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देने की बात करता है, जिसमें हमारा संदेश भी शामिल है।

लेकिन यह सिखाने के बारे में भी बात करता है, जो कुछ भी मैंने तुम्हें आदेश दिया है उसे सिखाना। हमारे पास पाँच प्रवचन अनुभाग हैं, प्रमुख प्रवचन अनुभाग। मैथ्यू के सुसमाचार में अन्यत्र शिक्षाएँ हैं, लेकिन हमारे पास मैथ्यू के सुसमाचार में पाँच प्रमुख प्रवचन खंड हैं।

मैथ्यू अध्याय पांच से सात राज्य की नैतिकता को संबोधित करते हैं। अध्याय 10 राज्य की उद्घोषणा का मॉडल प्रस्तुत करता है। अध्याय 13 राज्य के दृष्टांत, राज्य के सात या आठ दृष्टांत देता है, जो राज्य के वर्तमान पहलू पर जोर देता है, कि कैसे राज्य पहले से ही रोटी में छिपे सरसों के बीज या खमीर की तरह मौजूद है।

अध्याय 18 राज्य में रिश्तों से संबंधित है। अध्याय 23 से 25 भविष्य के राज्य और धार्मिक प्रतिष्ठान पर निर्णय से संबंधित हैं। अब, कुछ लोग 23 को 24 से 25 तक अलग देखेंगे, लेकिन मैंने जिन पाँच प्रवचन खंडों की गणना की है उनमें से प्रत्येक इन शब्दों के साथ समाप्त होता है।

और जब यीशु ने ये बातें पूरी कर लीं, या एक मामले में, जब यीशु ने ये दृष्टान्त खत्म कर दिए। तो, इनमें से प्रत्येक के लिए एक सूत्र की तरह समापन होता है। और 23 प्रकार के बहाव 24 और 25 में बदल जाते हैं।

लेकिन यदि आप उन्हें छह प्रवचन अनुभाग बनाना चाहते हैं, तो यह ठीक है। अक्सर यहूदी लोग टोरा के आधार पर चीज़ों को पाँच भागों में बाँटना पसंद करते थे। स्तोत्र को पाँच खंडों में विभाजित किया गया था।

उन्होंने कहावतों को पाँच भागों में विभाजित किया। मिशनाह अबोट का प्रारंभिक रूप, खैर, मिशनाह अबोट क्या बन गया? कुछ और जोड़ने से पहले इसके प्रारंभिक स्वरूप को पाँच खंडों में विभाजित किया गया था। लेकिन ये सीधे तौर पर पेंटाटेच के पाँच खंडों से मेल नहीं खाते हैं।

इसलिए, यदि आप पाँच अनुभाग नहीं देखना चाहते, तो कोई बात नहीं। लेकिन किसी भी मामले में, यीशु की शिक्षाओं में ये प्रमुख विषय हैं। अब, चूँकि मैं यहाँ केवल सारांश दे रहा हूँ, मैं उन सभी शिक्षाओं का अध्ययन नहीं करने जा रहा हूँ क्योंकि हमें अभी भी मैथ्यू के सुसमाचार का अध्ययन करना बाकी है।

लेकिन मैं शिष्यत्व के विषय को संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ क्योंकि वह एक राष्ट्र के शिष्य बनाने की बात कर रहे हैं। तो, मैथ्यू के सुसमाचार में इसका क्या तात्पर्य है? ठीक है, मैथ्यू के सुसमाचार में, शिष्य बनाने का मतलब है कि हम यीशु के लिए शिष्य बना रहे हैं, अपने लिए नहीं क्योंकि वह विशेष रूप से मैथ्यू 23 में ऐसा कहता है। हम अन्य मजदूरों को यीशु की सेवा करने के लिए तैयार कर रहे हैं, ताकि वे बाहर जा सकें और शिष्य भी बना सकें।

यह कुछ ऐसा है जो कई गुना बढ़ गया है। यीशु, सबसे पहले, नौकरी की सुरक्षा से ऊपर हैं। आप मैथ्यू अध्याय चार में देखते हैं, कैसे उसने लोगों को मछली पकड़ने के जाल छोड़कर उसके पीछे चलने के लिए कहा।

और मछुआरे वास्तव में सबसे गरीब वेतनभोगी लोग नहीं थे। वे वास्तव में आम तौर पर किसानों की तुलना में बेहतर मजदूरी कमाते थे। परन्तु वह उन्हें यह त्यागने और उसका अनुसरण करने के लिए कहता है।

ऐसा नहीं है कि मछली पकड़ना किसी भी तरह से बुरा है, लेकिन उसके पास उनके लिए करने के लिए कुछ और भी है। हम यह भी देखते हैं कि यीशु आवासीय सुरक्षा से ऊपर हैं। लोमड़ियों के पास छेद हैं, पक्षियों के पास घोंसले हैं, लेकिन यीशु के पास आराम करने के लिए कहीं नहीं है, सिवाय तूफान के दौरान शायद गैलीलियन मछली पकड़ने वाली नाव की कड़ी पर।

वह एक शिशु के रूप में भी शरणार्थी था जिसे हम अध्याय दो में देखते हैं। यीशु आवासीय सुरक्षा से ऊपर हैं। मैथ्यू के सुसमाचार में, वास्तव में, कोई यीशु से कह रहा है, तुम जहाँ भी जाओगे, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा, क्योंकि यीशु एक नाव में चढ़कर गलील की झील को पार करने वाले हैं।

यीशु ने उत्तर दिया कि यदि आप मेरा अनुसरण करना चाहते हैं, तो इस बात पर भरोसा न करें कि आपके पास सिर छुपाने के लिए भी जगह होगी। यीशु वित्तीय सुरक्षा से भी ऊपर हैं। यीशु किसी को सब कुछ गरीबों को देने के लिए कहते हैं।

वह 19:21 में था। वह ऐसा एक अमीर आदमी से कहता है। लेकिन अध्याय छह में, वह हम सभी से स्वर्ग में अपना खजाना जमा करने के लिए कहता है।

यीशु वित्तीय सुरक्षा से ऊपर हैं। यीशु सामाजिक दायित्वों से भी ऊपर हैं। जब वह किसी से कहता है, मुर्दे को अपने मुर्दे गाड़ने दो।

अब मैं इसकी पृष्ठभूमि के बारे में अधिक विस्तार से बता सकता हूँ, लेकिन ध्यान रखें कि एक बेटे का सबसे बड़ा दायित्व अपने पिता और माँ का सम्मान करना था। और उस दायित्व की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति, विशेष रूप से सबसे बड़े बेटे के लिए, पिता को दफनाना था। यीशु के लिए यह कहना कि पिता को दफनाने में उन्हें प्राथमिकता दी गई थी, यीशु के लिए उस भूमिका का दावा करना था जो यहूदी परंपरा में केवल ईश्वर को सौंपी गई थी।

और यह युवक, यदि उसने अपने पिता के दफनाने का काम नहीं किया, तो उसे जीवन भर के लिए अपने गाँव से बहिष्कृत माना जाएगा, क्योंकि यह सिर्फ सामाजिक रूप से अप्रिय था। यीशु का अनुसरण करना सामाजिक दायित्वों से ऊपर था। और यीशु स्वयं जीवन से भी ऊपर हैं।

वह कहता है कि यदि तुम मेरे पीछे चलना चाहते हो, तो अपना कूस उठाओ और मेरे पीछे आओ। अर्थात् मैं सूली पर जा रहा हूँ। यदि तुम मेरे पीछे आना चाहते हो, तो अपना कूस उठाओ और हम वहाँ एक साथ चलेंगे।

तुम्हें मरने के लिए तैयार रहना होगा. खैर, क्या ये मांगें हमारे लिए बहुत कठिन लगती हैं? वे चीजें जो यीशु अपने अनुयायियों से माँगता है? यह एक पूर्ण मानक है, और फिर भी इसे शालीनता से लागू किया गया है। इसीलिए यह मददगार है कि हमारे पास मैथ्यू के विहित सुसमाचार में न केवल यीशु के कथनों का संग्रह है, बल्कि हमारे पास इसके साथ चलने वाली कथा भी है।

रोमनों को यीशु के क्रूस को ले जाने के लिए साइरेन के साइमन नाम के एक दर्शक को बुलाना पड़ा। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, यदि तुम मेरे शिष्य बनना चाहते हो, तो अपना क्रूस उठाओ और मेरे पीछे आओ। रोमनों को वह करने के लिए एक दर्शक को बुलाना पड़ा जो यीशु के अपने शिष्यों ने नहीं किया था।

यीशु ने कहा, यदि तुम मेरा इन्कार करोगे, तो मैं अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने तुम्हारा इन्कार करूंगा। पतरस ने उसका इन्कार किया, और फिर भी पश्चाताप करने वालों के लिए क्षमा थी। यहूदा गया और उसने खुद को फाँसी लगा ली, लेकिन निकटवर्ती पेरिकोप या पैराग्राफ में, निकटवर्ती पैराग्राफ में, पीटर ने अपने दुःख को एक अलग तरीके से व्यक्त किया है।

वह रोता है, वह शोक मनाता है। यीशु ने अपने शिष्यों को अस्वीकार नहीं किया। उन्होंने उन लोगों को अस्वीकार नहीं किया जो आज यीशु के शिष्यों के अग्रदूत थे।

मेरा मतलब है, गेथसमेन में, हम उसके पास सोने गये। एक रात जब लोग फसह के लिए जागते थे, वे भगवान द्वारा किए गए महान कार्यों के बारे में बात करते थे, उनके शिष्य उनके पास सोने चले जाते थे। उनके शिष्य उन्हें छोड़कर भाग गये।

और क्रूस पर, अधिकांश पुरुष शिष्य दिखाई नहीं दिए, यहाँ तक कि क्रूस पर भी नहीं। मूल रूप से, जाहिर तौर पर कब्र पर भी। और फिर भी, शिष्यों को अस्वीकार करने के बजाय, ये सामान्य लोग जिन्हें यीशु ने चुना था, यीशु ने अभी तक उनका काम समाप्त नहीं किया था, लेकिन उन्होंने उन्हें उस तरह के लोगों में बनाया जैसा उन्होंने उन्हें बनने के लिए बुलाया था।

और चूँकि ईश्वर हमें ऐसे लोगों में बनाता है जिनके लिए उसने हमें बुलाया है, हम इसका श्रेय नहीं ले सकते। क्योंकि जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं और कहते हैं, हे प्रभु, मैं आपके प्रति पूरी तरह समर्पित हूँ, आप मुझसे जो भी मांगेंगे मैं वह करूंगा। और हमने इसे अपने बलिदानों से प्रदर्शित किया है, वैसे, हम प्रभु के लिए जीते हैं।

हम मानते हैं कि यह उसकी कृपा के कारण है जो हमारे अंदर काम कर रही है, क्योंकि वह हमारे साथ धैर्यवान था और उसकी आत्मा हमारे अंदर काम कर रही है। और वह हमें उस प्रकार का व्यक्ति बनाता है जिसके लिए उसने हमें बुलाया है। यही शिष्य अंततः सभी राष्ट्रों के बीच खुशखबरी फैलाने के उत्प्रेरक बने।

और वे हमारे अग्रदूत थे. भगवान आपके जैसे या मेरे जैसे सामान्य लोगों को ले सकते हैं, और वह हमें कुछ और बना सकते हैं। और यही मैथ्यू के सुसमाचार से मेरे परिचय का निष्कर्ष है।

इस बिंदु पर, मैं मैथ्यू अध्याय एक को देखते हुए मैथ्यू के सुसमाचार की शुरुआत करने के लिए तैयार हूँ। माउंट सर्मन से पहले मैथ्यू अध्याय एक से चार, मैथ्यू के सुसमाचार में कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों का परिचय देते हैं। जीवनियाँ अक्सर अपने विषय के पूर्वजों की प्रशंसा करने से शुरू होती हैं जब उनके पूर्वज महत्वपूर्ण थे, या अपने विषय के पालन-पोषण की प्रशंसा करते हैं, या बाद में

महानता का दिखावा करने के लिए विषय के जन्म या बचपन के बारे में महत्वपूर्ण प्रसंगों का वर्णन करते हैं।

खैर, मैथ्यू और ल्यूक में भी ये सभी शामिल हैं। पृष्ठभूमि से निपटने के भाग के रूप में, कभी-कभी आप वंशावली को शामिल करेंगे। मैथ्यू वंशावली के साथ आरंभ करता है।

प्राचीन काल में लोग आमतौर पर अपने पूर्वजों का अच्छे से ध्यान रखते थे। सात पीढ़ी पहले की वंशावली मिस्र के कुछ गांवों में आपकी कराधान स्थिति को प्रभावित कर सकती है। और लोग अपने वंश पर नज़र रखेंगे, खासकर यदि उनके वंश बहुत महत्वपूर्ण हों।

उदाहरण के लिए, यदि आप यहूदी थे और आपके पूर्वज पुजारी थे, तो आपको इसका बहुत सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड रखना होगा। यदि आप शाही वंश के वंशज हैं, तो आप निश्चित रूप से उस पर नज़र रखना चाहेंगे। वास्तव में एक परंपरा है जिसे आरंभिक ईसाइयों ने संरक्षित रखा।

यह बाइबिल में नहीं है, लेकिन पहली शताब्दी के अंत में डोमिनियन के समय में यीशु के रिश्तेदारों का उनके शाही वंश के कारण सम्राट के सामने स्वागत किया गया था। मैथ्यू हमें कुछ बातें सिखाने के लिए यीशु की वंशावली का उपयोग करता है। यह यीशु की आधिकारिक वंशावली है।

जोसेफ के माध्यम से उनकी आधिकारिक शाही वंशावली मैरी के माध्यम से उनकी आनुवंशिक वंशावली से अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिये यूसुफ की वंशावली फिर से गिनायी जाती है। राजाओं के लिए दत्तक ग्रहण का प्रयोग नियमित रूप से किया जाता था।

तो, विभिन्न राजाओं में से, जूलियो-क्लाउडियन राजवंश में रोम के विभिन्न सम्राट, इस अवधि के राजवंश, उनमें से एक भी वास्तव में पिछले सम्राट का जन्मदाता नहीं था। इन सभी को पिछले सम्राट के पुत्रों के रूप में गोद लिया गया था। इसलिए, यूसुफ द्वारा यीशु का पालन-पोषण किया जाना वंश का उत्तराधिकारी है।

अब शायद मैरी भी वंश की उत्तराधिकारी थी, लेकिन हम यह नहीं जानते। मैथ्यू जोसेफ के वंश को निर्दिष्ट करता है। लेकिन मैथ्यू की रुचि न केवल शाब्दिक रूप से यीशु के शाही वंश में है, बल्कि मैथ्यू यीशु की आध्यात्मिक विरासत के बारे में कुछ आध्यात्मिक बातें भी बताना चाहता है।

यह कुछ ऐसा है जो उनके यहूदी संदर्भ में बहुत परिचित होगा क्योंकि रब्बी अक्सर धर्मग्रंथों पर मथ्यरात्रि शब्द नाटकों का उपयोग करते थे। और यहां हमारे पास उनमें से कुछ हैं। यदि आपके पास अंग्रेजी अनुवाद है, तो आप इसे अपने अधिकांश अंग्रेजी अनुवादों में नहीं देखेंगे क्योंकि मुझे लगता है कि अनुवादकों ने सोचा कि यह सिर्फ एक टाइपो था।

यह महज़ एक मुद्रण त्रुटि थी, एक वर्तनी त्रुटि थी। लेकिन ग्रीक में, अध्याय एक के श्लोक 10 में, यह नहीं कहा गया है कि यीशु अम्मोन के वंशज थे, जो एक दुष्ट राजा था जो केवल दो वर्ष जीवित रहा। यह अम्मोन के एक अक्षर को अमोस में बदल देता है, जो कि कोई बुरा बदलाव नहीं है

क्योंकि ग्रीक में, नाम अक्सर एस के साथ समाप्त होते हैं और आप समझ सकते हैं कि ऐसा क्यों किया गया होगा।

परन्तु अम्मोन एक दुष्ट राजा था। अमोस एक भविष्यवक्ता था। और वह एक ग्रीक अक्षर भी जोड़ता है, जो अंग्रेजी में दो अक्षरों के रूप में सामने आता है, लेकिन राजा आसा के लिए एक ग्रीक अक्षर होता है।

वहाँ यह आसा नहीं है, जो बुरा राजा नहीं था, बल्कि आसा यहूदा का राजा था। लेकिन श्लोक आठ में मैथ्यू ने अपने नाम में एक अक्षर जोड़ा और यह आसाप बन गया। खैर, आसाप कौन था? आसाप एक भजनहार था।

इसलिए, यीशु न केवल डेविडिक वंश का उत्तराधिकारी बन गया, बल्कि आध्यात्मिक रूप से वह भविष्यवक्ताओं और भजनों का भी उत्तराधिकारी है। अब, वंशावली का कार्य। बाइबिल की वंशावली कभी-कभी युगों के बीच के इतिहास का सारांश प्रस्तुत करती है।

हमारी लगभग 10 पीढ़ियाँ हैं जो तीन पुत्रों में समाप्त होती हैं, मैथ्यू उत्पत्ति, और फिर एक और वंशावली है जिसमें 10 पीढ़ियाँ लगभग तीन पुत्रों में समाप्त होती हैं। समय के साथ आगे बढ़ने के एक तरीके के रूप में आपको उत्पत्ति में इन वंशावली के माध्यम से अलग-अलग युग जुड़े हुए मिले हैं। यहूदी धर्म में भी, वे ईश्वर की संप्रभुता की याद दिलाने के रूप में कार्य कर सकते थे।

बाद में रब्बियों ने कहा कि विवाह की व्यवस्था करना लाल सागर को विभाजित करने से भी कठिन है ताकि सभी विवाह सही ढंग से संपन्न हो सकें ताकि आपका अस्तित्व बना रहे। लेकिन यहां सबसे महत्वपूर्ण यह संदेश है कि समय आ गया है। वंशावली में अक्सर कुछ पीढ़ियों को छोड़ दिया जाता है।

और हम उसी अवधि के लिए मैथ्यू और ल्यूक की तुलना करके बता सकते हैं कि मैथ्यू ने कुछ पीढ़ियों को छोड़ दिया। हम मैथ्यू की वंशावली की 2 इतिहास से तुलना करके भी बता सकते हैं कि मैथ्यू ने कुछ पीढ़ियों को छोड़ दिया। लेकिन वह यहाँ लगभग 14 पीढ़ियाँ, वहाँ लगभग 14 पीढ़ियाँ लेकर आ रहा है।

और मैथ्यू जो कह रहा है, वह यह है कि देखो, यह इब्राहीम से डेविड तक निर्वासन तक, और अब यीशु के समय तक की पीढ़ियाँ हैं। इन प्रमुख अंतरालों पर, इज़राइल के इतिहास में कुछ बड़ी घटनाएँ घटीं। इस अवधि में इज़राइल में एक बड़ी घटना होने वाली थी, और अब यह हो गया है।

मत्ती 1:1. सचमुच, बिब्लोस जीनसियोस, यीशु मसीह की उत्पत्ति की पुस्तक। यह ग्रीक अनुवाद से लिया गया है, यदि आप ग्रीक में लिख रहे हैं तो स्वाभाविक रूप से आप इसका उपयोग करते हैं। इसे उत्पत्ति 5.1 के यूनानी अनुवाद से लिया गया है, जिससे वास्तव में उत्पत्ति की पुस्तक, यूनानी शीर्षक के अनुसार, अपना नाम प्राप्त करती है।

बेशक, हिब्रू में, यह बेरेशिट है, लेकिन अंग्रेजी में, वैसे भी, हम जेनेसिस शीर्षक का उपयोग करते हैं। यीशु की उत्पत्ति की पुस्तक. अब, आमतौर पर जब उत्पत्ति में यह सूत्र या सूत्र होता है, जैसे आदम की पीढ़ियों की पुस्तक या नूह की पीढ़ियों की पुस्तक, तो इसके बाद जो होता है वह किसी के पूर्वज नहीं, बल्कि उसके वंशज होते हैं।

क्योंकि किसी के वंशज, आदम के वंशज अपनी पृष्ठभूमि, अपनी विरासत के लिए आदम पर निर्भर होते हैं। नूह के वंशज नूह में अपनी पहचान के लिए उस पर निर्भर हैं। लेकिन यहाँ, इसमें यीशु के वंशजों की सूची नहीं है।

इसमें उनके पूर्वजों की सूची है जो यीशु में चरमोत्कर्ष पर पहुँचे। क्योंकि यीशु के पूर्वज भी परमेश्वर के उद्देश्य में उस पर निर्भर थे। वह इज़राइल के इतिहास का चरमोत्कर्ष है।

यीशु इस सारे इतिहास का कारण था जो यहीं चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है, अंतिम कारण। ऐसा कहा जाता है कि यीशु यहाँ इब्राहीम का पुत्र है, वही सच्चा इस्राएली है। और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हम यीशु और इज़राइल के इतिहास के बीच संबंध देखेंगे, विशेषकर अध्याय दो में, और अध्याय चार में भी।

यीशु भी दाऊद का पुत्र है। मैथ्यू में अन्यत्र, इसका अर्थ अपेक्षित मसीहा है। डेविड का बेटा प्राचीन यहूदी स्रोतों में कहीं और एक मसीहा शीर्षक था, जैसे सोलोमन के भजन और मृत सागर स्कॉल इत्यादि।

प्राचीन वंशावली में अक्सर केवल पुरुषों को ही सूचीबद्ध किया जाता था। यदि सबसे महत्वपूर्ण महिलाओं को शामिल किया जाए, तो आप उम्मीद कर सकते हैं कि इसमें इज़राइल की चार कुलमाताएं, या कम से कम उनमें से तीन जो एक समय में हो सकती थीं, सारा, रेबेका, लिआ और राचेल शामिल होंगी। ये चार कुलमाताएँ थीं जो नियमित रूप से यहूदी साहित्य में दिखाई देती थीं।

लेकिन मैथ्यू में ये चार महिलाएं शामिल नहीं हैं। इसके बजाय, मैथ्यू में उत्पत्ति 38 से तामार, जोशुआ 2 और 6 से राहाब, रूथ की किताब से रूथ और 2 सैमुअल अध्याय 11 और उसके बाद से ऊरिय्याह की विधवा शामिल है। ये इज़राइल के इतिहास में महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं।

तामार कनान से थी, राहाब कनान से थी, रूथ एक मोआबी थी, और बथशेबा की शादी एक हिती से हुई थी। तो, यह एक असाधारण वंशावली है. अधिकांश वंशावली किसी के इज़राइली या लेवीय वंश की शुद्धता को उजागर करना पसंद करती हैं।

इसके बजाय मैथ्यू ने यीशु की मिश्रित विरासत, तीन अन्यजातियों और एक अन्यजाति की विधवा पर प्रकाश डाला। तो, आप जानते हैं कि गैर-यहूदी मिशन, मैथ्यू 28.19, पर बाद में विचार नहीं किया गया है, लेकिन यह कुछ ऐसा है जिसके लिए मैथ्यू शुरू से ही अपने दर्शकों को तैयार कर रहा है। वंशावली के बाद, हमारे पास एक पैराग्राफ है जो जोसेफ की धर्मपरायणता के बारे में बात करके यीशु की पृष्ठभूमि के बारे में अधिक बात करता है।

प्राचीन जीवनीकार किसी के पालन-पोषण, उसके माता-पिता या उसके पूर्वजों की पवित्रता और नायक के जन्म की असामान्य विशेषताओं पर भी जोर दे सकते हैं। इस मामले में, हमारे पास यीशु के जन्म की एक विशेष रूप से असामान्य विशेषता है, जो आम तौर पर जन्मों से जुड़ी नहीं है, अर्थात् यह एक कुंवारी जन्म है। लोगों ने कभी-कभी इसकी समानताएं उद्धृत करने की कोशिश की है, और समानताएं वास्तव में बहुत खराब हैं।

मेरा मतलब है, ऐसी कई चीजें हैं जहां आप देख सकते हैं और आप समानताएं पा सकते हैं। यीशु की कई शिक्षाओं में यहूदी समानताएं वगैरह हैं। लेकिन कुंवारी जन्म, आप जानते हैं, अन्यजातियों, यूनानियों के पास यूनानी देवताओं द्वारा नश्वर लोगों को गर्भवती करने, बलात्कार करने या युवा महिलाओं या लड़कियों को बहकाने की कहानियाँ थीं।

लेकिन यह उस सच्चे देवता के विचार के लिए अप्रासंगिक है जो मैरी के साथ संभोग नहीं करता है। वह उसे उसी प्रकार उत्पन्न करता है जिस प्रकार वह सृष्टि को अस्तित्व में ला सकता है। वह सिर्फ उसे गर्भवती होने का कारण बनता है।

इसके करीब कुछ चमत्कारी जन्मों का विचार है जैसा कि हमारे पास पुराने नियम में है। चमत्कारी जन्मों के बाइबिल वृत्तांत, इसहाक, जैकब और जोसेफ सभी प्रार्थना के उत्तर के बाद आए, बंद गर्भ खोले गए। हमारे पास पुराने नियम, इश्माएल और सैमसन में स्वर्गदूतों द्वारा भविष्यवाणी की गई जन्म भी हैं, लेकिन हमारे पास वहां कोई कुंवारी जन्म नहीं है।

और उन लोगों के लिए जो यह कहना पसंद करते हैं कि आपके पास प्राचीन देवता थे, उनके कुंवारी जन्म होने की मिथक, यह सच नहीं है। आपको वह प्राचीन स्रोतों में नहीं मिलता। वे ऐसी बातें हैं जो तथ्य के बाद बनी थीं।

यीशु के कुंवारी जन्म के बारे में बात की तो वे आसपास नहीं थे। कभी-कभी अनुच्छेद हमें बताते हैं कि कोई पात्र कितना विश्वसनीय है, और वे जो कहते हैं उससे हम कितनी अपेक्षा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब गॉस्पेल ने जॉन को भविष्यवक्ता कहा, तो हम उम्मीद कर सकते हैं कि जॉन जो कहता है उसका अधिकांश भाग सही होगा।

जॉन सब कुछ ठीक से नहीं समझता। वह यह नहीं समझता कि राज्य दो चरणों में आता है। इसलिए, वह जानना चाहता है कि क्या यीशु का वादा किया गया है या नहीं, जब वह सिर्फ यीशु के बारे में सुनता है कि वह लोगों को आग में बपतिस्मा देने के बजाय लोगों को ठीक कर रहा है।

लेकिन जॉन अधिकतर एक विश्वसनीय व्यक्ति है। उसे भविष्यवक्ता कहा जाता है और आपको उससे अधिकतर सही चीजें ही मिलेंगी। खैर, मैथ्यू हमें जोसेफ के बारे में कुछ बताता है।

हम उसके व्यवहार से सीख सकते हैं क्योंकि मैथ्यू विशेष रूप से हमें बताता है कि यूसुफ एक धर्मी व्यक्ति था। ल्यूक का सुसमाचार हमें मैरी और उसकी भागीदारी के बारे में अधिक बताता है, लेकिन मैथ्यू हमें जोसेफ के बारे में बताता है। और क्योंकि मैथ्यू हमें यह स्पष्ट रूप से बताता है, हम इस संदर्भ में जोसेफ के चरित्र से आत्मविश्वास से कुछ सबक सीख सकते हैं।

हम विवाह में प्रतिबद्धता, करुणा और दया, समर्पण या नियंत्रण के बारे में सीख सकते हैं। और यदि आप इसे अनुवाद में सुन रहे हैं, तो इसके बारे में चिंता न करें। मैंने कभी-कभी सी के साथ आने के लिए सबसे अच्छे शब्दों का उपयोग नहीं किया था। लेकिन नियंत्रण आत्म-नियंत्रण होना चाहिए, और समर्पण आज्ञाकारिता होना चाहिए।

पहला तो बस निहित है, विवाह में प्रतिबद्धता। कुछ संस्कृतियों में, हम वैवाहिक निष्ठा को पर्याप्त गंभीरता से नहीं लेते हैं। हम व्यभिचार को उतनी गंभीरता से नहीं लेते।

जोसेफ द्वारा व्यभिचार के संदेह पर मैरी को तलाक देने से पता चलता है कि वह और उसकी संस्कृति वैवाहिक निष्ठा को कितनी गंभीरता से लेते थे। यहूदी और रोमन दोनों कानूनों में व्यभिचार के मामले में तलाक की आवश्यकता थी। वास्तव में, रोमन कानून में, यदि कोई व्यक्ति जानता था कि उसकी पत्नी व्यभिचार कर रही है और उसने उसे तलाक नहीं दिया है, तो उस पर लेनो क्रिनियम के अपराध के लिए मुकदमा चलाया जा सकता है, अर्थात् उसका दलाल होने के लिए।

इसलिए, उस संस्कृति में इसे बहुत गंभीरता से लिया गया था। और यह मैथ्यू 5.32 और 19.9 में मैथ्यू की शिक्षा को दर्शाता है, जहां व्यभिचार के कारण तलाक की अनुमति है, क्योंकि यह समझा जाता है कि व्यभिचार विवाह का एक बहुत ही गंभीर उल्लंघन है, कुछ ऐसा जो लोगों को नहीं करना चाहिए। अब, मैं कहता हूं कि यह केवल निहित है।

इस परिच्छेद में इसे बस मान लिया गया है। लेकिन हम कुछ ही क्षणों में परिच्छेद के कुछ और स्पष्ट, स्पष्ट पाठों को देखने जा रहे हैं। लेकिन मैं पहले यह बताना चाहता हूं कि जोसेफ शायद मैरी को नहीं जानते थे जैसा कि आधुनिक समय में सगाई के बारे में बात करते समय लोग अक्सर मान लेते हैं।

सगाई या विवाह प्रायः एक वर्ष तक चलता था। और एक छोटे से गांव में आपको कई लोगों के बारे में कुछ न कुछ जानने को मिलेगा। लेकिन उस सगाई की अवधि के दौरान, गलील में एक संरक्षक के अलावा युवक और युवती एक साथ नहीं रहेंगे।

यहूदिया में, यह उतना सख्त नहीं था, लेकिन गलील में, आम तौर पर उनके पास एक संरक्षक होता था। यह सगाई विवाह की तरह ही कानूनी रूप से बाध्यकारी थी। इसे केवल दो तरीकों में से एक द्वारा भंग किया जा सकता है, तलाक द्वारा या आप में से किसी एक की मृत्यु से।

इसलिए, यूसुफ उसे तलाक देने के लिए तैयार हो रहा है क्योंकि उसे लगता है कि उसने अनुबंध तोड़ दिया है। और इसीलिए उसे तलाक लेना पड़ा, भले ही यह सिर्फ सगाई ही हो। यह निश्चित रूप से पश्चिमी जुड़ाव से कहीं अधिक है।

इस दौरान शादी से पहले संभोग करना वर्जित था। एक व्यक्ति जिसे व्यभिचार का दोषी पाया गया था, भले ही व्यवस्थाविवरण 22 में उन्हें फाँसी देने की बात कही गई है, वास्तव में इस अवधि में इसका अभ्यास नहीं किया गया था। हमारे सभी सबूत बताते हैं कि इस अवधि में, उसे बहुत सारी शर्मिंदगी और अपमान सहना पड़ेगा।

वास्तव में इसके लिए उसे फाँसी नहीं दी जाएगी। खैर, जोसेफ की उसके प्रति प्रतिक्रिया करुणा है। उसे सार्वजनिक रूप से तलाक देकर, उसे नगर के द्वार पर बड़ों के सामने ले जाकर, वह उसके पिता द्वारा दिया गया कोई भी दहेज रख सकता था।

अब, जिस तरह से यह इस संस्कृति में काम करता था वह ग्रीक संस्कृति में था, पिता अपनी बेटियों को दहेज देते थे। वे उन्हें कुछ पैसे देंगे जिससे उन्हें गुजारा करना होगा। यदि उनके पति ने उन्हें तलाक दे दिया, तो पति को दहेज चुकाना होगा, इत्यादि।

उन आर्थिक व्यवस्थाओं के कारण, वास्तव में, ग्रीक संस्कृति में, वे लड़के शिशुओं की तुलना में लड़कियों को अधिक बार बाहर फेंक देते थे। लेकिन यहूदी संस्कृति में, उन्हें किसी भी बच्चे को बाहर नहीं फेंकना चाहिए था। यहूदी संस्कृति में, परंपरागत रूप से ऐसा होता था कि भावी दूल्हा अपने ससुर को दुल्हन की कीमत चुकाता था।

यह अपनी बेटों की परवरिश के लिए परिवार को धन्यवाद देने का एक तरीका था। यह न केवल आभार व्यक्त करने का एक तरीका था, बल्कि दुल्हन को सम्मानित भी करता था। आज कई संस्कृतियों में दुल्हन की कीमत इस प्रकार है।

दरअसल, मेरी पत्नी अफ्रीका के एक देश से है जहां कानूनी तौर पर हमें शादी करने के लिए दुल्हन की कीमत चुकानी पड़ती थी। और इसलिए, मैंने एक भुगतान किया क्योंकि मैं वास्तव में उससे शादी करना चाहता था। लेकिन किसी भी स्थिति में, वह शादी में जो भी पैसा लायी थी, वह वह रख सकता था।

और इस काल में यहूदी लोगों के बीच इसका चलन तेजी से बढ़ रहा था। यदि वह व्यभिचार की दोषी होती तो वह इसे रख सकता था। साथ ही, वह अपने ससुर को चुकाई गई अपनी दुल्हन की कीमत में से कोई भी वापस पा सकता है, हालाँकि इन परिस्थितियों में वह संभवतः इसे किसी भी तरह वापस पा लेगा।

लेकिन साथ ही, वह अपनी शर्मिंदगी का बदला भी ले सकता था। वह उससे अपना बदला ले सकता था। और वह अपनी बेगुनाही को स्पष्ट कर सकता था, जैसे, मैं वह नहीं हूँ जिसने उसे गर्भवती किया।

यह देखो। मैं इस बात से परेशान हूँ। लेकिन इसके बजाय, उन्होंने एक निजी तलाक चुना, जो केवल दो या तीन गवाहों के सामने था।

वह उसे वह देगा जिसे गिट कहा जाता था, जिसका मतलब यह नहीं था कि यहां से निकल जाओ, लेकिन गिट तलाक का प्रमाण पत्र था। और इससे उसे अगर वह चाहे तो किसी और से शादी करने की इजाजत मिल जाएगी। लेकिन वह कह रहा था, अब तुम मेरे प्रति बाध्य नहीं हो।

मैं तुम्हें इससे मुक्त कर रहा हूँ। लेकिन उसने उसे शर्मिंदगी से बचाने के लिए निजी तौर पर ऐसा करने का फैसला किया। यह हमें कुछ सिखाता है कि एक धर्मी व्यक्ति होने का क्या मतलब है।

यूसुफ एक धर्मी व्यक्ति था. धार्मिकता का एक हिस्सा यह है कि हम उन लोगों को माफ कर देते हैं जिनके बारे में हमें लगता है कि उन्होंने हमें चोट पहुंचाई है, हम दया दिखाते हैं और हम अपने दुश्मनों से प्यार करते हैं, जैसा कि मैथ्यू का सुसमाचार भी हमें सिखाता है। अब, इस मामले में, उसने वास्तव में कुछ भी गलत नहीं किया था, लेकिन उसने सोचा कि उसने किया था, और वह दया दिखाता है।

लेकिन साथ ही, हम समर्पण या आज्ञाकारिता के बारे में भी सीखते हैं। उससे शादी करने के लिए, जोसेफ को जीवन भर शर्मिंदगी झेलनी पड़ेगी। वह उसकी शर्मिंदगी में ऐसे शरीक होगा मानो उसने उसे गर्भवती कर दिया हो।

अब यह एक ऐसी संस्कृति थी जहाँ सम्मान और शर्म बहुत महत्वपूर्ण थे। लोग यह मानने लगे थे कि उसने उसे गर्भवती कर दिया है। कुछ बाद की चर्च परंपराओं के अनुसार, यूसुफ शायद शादीशुदा था, और उसकी पहली पत्नी की मृत्यु हो गई थी, और इस तरह यीशु के अन्य भाई-बहन हुए।

हममें से कई विद्वान सोचते हैं कि वास्तव में शायद यह एक बाद की परंपरा है। यह परंपरा वास्तव में जेम्स के प्रोटोएवेंजेलियम से पहले प्रमाणित नहीं है। तो, आप उस पर जो भी विचार करना चाहें, ले सकते हैं।

लेकिन हममें से कई लोग यह तर्क देंगे कि शायद यह केवल एक औसत संभावना थी। यह संभवतः जोसेफ की पहली शादी थी। जोसेफ की उम्र शायद 18 से 20 साल के बीच थी, जो इस समय यहूदी पुरुषों के लिए शादी की सामान्य उम्र थी।

मैरी संभवतः किशोरावस्था में थी। जैसे ही लड़कियाँ युवावस्था में पहुँचती थीं, उन्हें गलील और यहूदिया में विवाह योग्य माना जाता था, लेकिन उनकी शादी अक्सर उससे थोड़ी बड़ी उम्र में होती थी। लेकिन ग्रीक संस्कृति के विपरीत मैरी शायद उससे बहुत छोटी नहीं थी, जहाँ उनका पति उनकी पत्नियों से बहुत बड़ा था।

तो, जोसेफ एक युवा व्यक्ति है। उसके सामने अपना सारा जीवन पड़ा हुआ है। मैरी के पास अपना पूरा जीवन पड़ा है, लेकिन वे उस सपने का पालन करते हैं जो भगवान ने उन्हें दिया था।

यह कोई साधारण सपना नहीं था, बल्कि इस सपने में प्रभु के एक दूत ने उससे बात की थी। मैथ्यू हमें इन सपनों के बारे में बताना पसंद करता है। आपके पास मैरी सपने देख रही है।

मैथ्यू अध्याय 27 में, आपके पास पीलातुस की पत्नी भी एक सपना देख रही है। जोसेफ के और भी सपने हैं। बाइबिल में, भगवान कभी-कभी अन्य तरीकों से प्रतीकात्मक सपने देते थे, लेकिन जब भगवान या कोई देवदूत आपसे बात करते थे, तो आप जानते थे कि बेहतर होगा कि आप उस सपने पर ध्यान दें।

ऐसा नहीं था कि बिस्तर पर जाने से पहले आपने कुछ बुरा खा लिया था। आत्म - संयम। जब तक यीशु का जन्म नहीं हुआ तब तक वे संभोग से दूर रहे।

युवा विवाहित जोड़े आमतौर पर गरीब होते थे। इसलिए, वे आमतौर पर एक ही कमरे में रहते थे। जोसेफ, अगर वह कई अन्य दूल्हों की तरह होता, जब उसकी पहली शादी हुई, अगर उसने अभी तक घर का निर्माण पूरा नहीं किया होता, तो जोसेफ और मैरी जोसेफ के माता-पिता के घर की तरह एक अस्थायी कमरे में रह रहे होते।

तो यहाँ वे करीब-करीब थे और फिर भी उन्होंने संभोग नहीं किया। अब उनकी शादी हो चुकी थी। उन्हें संभोग करने की इजाजत थी, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं करने का फैसला किया।

और उस समय बहुत से लोग सोचते थे कि यदि आप एक पुरुष और एक महिला को 45 मिनट के लिए अकेले छोड़ देंगे, तो वे हार मान लेंगे। वे विरोध नहीं कर पाएंगे। लेकिन जोसेफ और मैरी ने हमें दिखाया, और उन्होंने हमारी पश्चिमी संस्कृति के अधिकांश लोगों को शर्मिंदा किया, जो लोग कहते हैं कि हम खुद को नियंत्रित नहीं कर सकते।

हमारे पशु जुनून बहुत मजबूत हैं। जब तक, निश्चित रूप से, यह कुछ अवैध न हो और तब हम स्वयं को नियंत्रित करें। लेकिन जोसेफ और मैरी हमें आत्म-नियंत्रण का एक उदाहरण दिखाते हैं।

उन्होंने ऐसा क्यों किया? अगर उन्होंने शादी की रात संभोग किया होता, तो वे साबित कर सकते थे कि वह कुंवारी थी। वे अपने लिये सम्मान प्राप्त कर सकते थे। लेकिन उन्होंने परहेज करने का फैसला किया ताकि यह सिर्फ एक कुंवारी गर्भाधान न हो, बल्कि यह भगवान के मसीहा के सम्मान के लिए एक कुंवारी जन्म होगा जो उन्हें बताया गया था।

अब यदि हम यशायाह 7:14 के बारे में मैथ्यू के व्यवहार को देखें, तो इस परिच्छेद का इम्मानुएल पुत्र कौन है? यशायाह 7:14, इसलिये यहोवा आप ही तुम्हें एक चिन्ह देगा। देख, एक जवान स्त्री गर्भवती होगी और उसका एक बेटा भी होगा, और वह उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। अब यहाँ हिब्रू शब्दों में से एक के बारे में कुछ बहस चल रही है।

मैं उस बहस में नहीं जा रहा हूँ. मैं इससे निपटने के लिए इसे आपके यशायाह प्रोफेसर पर छोड़ दूँगा। लेकिन यशायाह में संदर्भ यह है।

यहोवा ने आहाज से फिर कहा, अपने लिये कोई चिन्ह मांग। प्रसंग यह है कि दो अन्य राज्य भी थे जो यहूदा के राज्य पर दबाव डाल रहे थे। उत्तर में सामरिया, इस्राएल का राज्य, और उत्तर पूर्व में दमिश्क या अराम का राज्य।

वे राजा आहाज को अशशूर के राजा के विरुद्ध अपने गठबंधन में शामिल करने का प्रयास कर रहे थे। और भविष्यवक्ता यशायाह कहते हैं, ऐसा मत करो। इन राज्यों को अशशूर के राजा द्वारा जीत लिया जाएगा।

ये दोनों राजा जिनसे तुम डरते हो, गिरने वाले हैं। उनकी बात मत सुनो. अब, प्रभु स्वयं तुम्हें एक संकेत देने जा रहा है।

और यह चिन्ह इसलिये है क्योंकि आहाज चिन्ह माँगना नहीं चाहता था। एक युवा महिला एक बेटे को जन्म देने वाली है। याद रखें, ध्यान रखें, यह ईसा पूर्व 700 के दशक में यहूदा के राजा आहाज के लिए एक संकेत है।

वह एक पुत्र को जन्म देगी, उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। वह उस समय दही और शहद खाएगा जब वह बुराई को त्यागने और अच्छाई को चुनने के लिए पर्याप्त रूप से जानता होगा। क्योंकि इससे पहले कि लड़का बुराई को त्यागकर अच्छाई को चुनना सीखे, वह देश जिसके दो राजाओं से तुम डरते हो, त्याग दिया जाएगा।

तो, ये अन्य राजा गैर-मुद्दे बनने जा रहे हैं। यह कुछ ऐसा था जो आहाज के जीवनकाल में घटित होगा। और ये कुछ ऐसा था कि दुनिया में इस बच्चे का जन्म होने वाला था।

अध्याय 8, तब यहोवा ने मुझ से कहा, यशायाह, इस पटिया पर लिख दे, कि लूट वेग से होगी, शिकार भी वेग से होगा; तो, वह भविष्यवक्ता के पास गया, यह यशायाह की पत्नी होगी, और वह गर्भवती हुई, और हो सकता है कि वह भी कोई हो जिसने भी भविष्यवाणी की हो, लेकिन मैं सिर्फ यह कह रहा हूँ कि इसीलिए वह उसके पास गया। वह उसके पास गया, और वह गर्भवती हुई, और उस ने एक पुत्र को जन्म दिया।

प्रभु ने कहा, उसका नाम महेर- शालाल -हश - बाज़ रखें। तेज़ लूट है, और तेज़ शिकार है। क्योंकि इससे पहले कि लड़का, हे मेरे पिता वा मेरी माता की दोहाई दे, दमिश्क का धन और सामरिया की लूट अशशूर के राजा के साम्हने छीन ली जाएगी।

क्या ऐसा लगता है कि इसका संबंध अध्याय 7 की भविष्यवाणी से हो सकता है? तो, ऐसा लगता है कि आहाज का संकेत यशायाह का अपना पुत्र होगा। क्या मैथ्यू ने इसे गलत समझा? परन्तु जैसा कि हम यशायाह, यशायाह 8:18 में पढ़ते रहते हैं, यशायाह कहता है, मैं और परमेश्वर ने मुझे जो सन्तान दी है वे इस्राएल के लिये चिन्ह और चमत्कार हैं। खैर, संकेत का उद्देश्य क्या है? क्या ऐसा इसलिए है ताकि हम संकेत को देख सकें और कह सकें, ओह, यह कितना प्यारा संकेत है।

मेरा मतलब है, काश मेरे शयनकक्ष में ऐसा कोई चिन्ह होता। तो, हम सिर्फ संकेत की प्रशंसा करते हैं। संकेत का मतलब यह है कि वह किसी चीज़ की ओर इशारा करता है।

यह हमारा ध्यान किसी चीज़ की ओर आकर्षित करता है। यशायाह और उसके पुत्र ऐसे नहीं थे कि हर कोई उसके पुत्रों की ओर देखता। वे किसी और चीज़ की ओर, अपने से परे किसी चीज़ की ओर इशारा कर रहे थे।

और इस मामले में, हाँ, एक तत्काल पूर्ति थी, लेकिन स्वयं यशायाह के भीतर भी, यह उससे परे एक बड़ी पूर्ति की ओर देख रहा था जब वास्तव में इमैनुएल, वास्तव में भगवान एक बड़े अर्थ में

हमारे साथ होंगे। और यह भी उसी संदर्भ का हिस्सा है जैसे आप यशायाह अध्याय 9, यशायाह 9 पद 6 और 7 में आगे बढ़ते हैं। हमारे लिए एक बच्चा पैदा होगा। हमें एक पुत्र दिया जाएगा।

सरकार उन्हीं के कंधों पर टिकी रहेगी। उसका नाम अद्भुत परामर्शदाता, पराक्रमी ईश्वर, अनन्त पिता, शांति का राजकुमार कहा जाएगा। और यह उसके दाऊद के सिंहासन पर शासन करने के बारे में बात करता है।

तो, यह दाऊद का वंशज होगा, और फिर भी उसे शक्तिशाली परमेश्वर भी कहा जाएगा। और ऐसा न हो कि आप सोचें कि शक्तिशाली ईश्वर का मतलब यह नहीं है कि उसे वास्तव में शक्तिशाली ईश्वर कहा जाएगा, इसके बाद का अध्याय स्वयं ईश्वर को शक्तिशाली ईश्वर के रूप में बताता है। तो, भगवान स्वयं इतिहास में आएंगे और भगवान स्वयं हमारे साथ भगवान होंगे।

खैर, क्या मैथ्यू ने यशायाह 7:14 को उद्धृत करते समय वास्तव में पूरा संदर्भ ध्यान में रखा था? मुझे लगता है कि मैथ्यू ने ऐसा किया, क्योंकि कुछ ही अध्यायों के बाद, मैथ्यू अध्याय 4, मैथ्यू यशायाह अध्याय 9 में उसी संदर्भ से उद्धरण देता है जब वह अन्यजातियों के गलील में एक प्रकाश की बात करता है। यह शक्तिशाली परमेश्वर के ठीक सामने का प्रसंग है। यदि कुछ अध्यायों के बाद भी वही संदर्भ मैथ्यू के दिमाग में है, तो मुझे लगता है कि यह विश्वास करने का अच्छा कारण है कि मैथ्यू अध्याय 1 में यह उसके दिमाग में था। जब हम पुराने नियम से मैथ्यू के उद्धरणों को देखते हैं तो हम कभी-कभी क्या करते हैं, हम पढ़ना चाहते हैं पुराने नियम में मैथ्यू, या हम कहते हैं, ओह, मैथ्यू ने संदर्भ नहीं पढ़ा।

लेकिन कभी-कभी समस्या यह होती है कि हमने संदर्भ को पर्याप्त रूप से नहीं पढ़ा है, जो मुझे लगता है कि मैथ्यू अध्याय 1 और श्लोक 23 और यशायाह 7.14 में मामला है। मैथ्यू को संदर्भ पता था। मैथ्यू ने शायद इसे उस तरह से नहीं संभाला जिस तरह से हममें से कुछ लोग आज धर्मग्रंथ को संभालते हैं, लेकिन मैथ्यू निश्चित रूप से जानता था कि वह बहुत परिष्कृत तरीके से क्या कर रहा था जो निश्चित रूप से उसके समय के अन्य यहूदी व्याख्याकारों के लिए समझ में आएगा। यदि आप अन्य यहूदी दुभाषियों को पढ़ें तो वह उनमें से सर्वश्रेष्ठ में से एक था।

लेकिन वैसे, जब मैंने जोसेफ के चरित्र से सबक लिया है, तो कभी-कभी लोगों को दोषी ठहराया गया है क्योंकि जिन लोगों को हम उपदेश देते हैं, जरूरी नहीं कि वे उन्हें उपदेश देने से पहले यौन रूप से शुद्ध जीवन जीते हों। इसलिए, उन्हें यह याद दिलाना अच्छा है कि इस अनुच्छेद में एक और चरित्र भी शामिल है और जब हम पाप के बारे में बात करते हैं तो इस चरित्र का उल्लेख करना वास्तव में उपयोगी होता है। और वह मैथ्यू अध्याय 1 और श्लोक 21 में है, यीशु, जो अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।

यह मैथ्यू की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 4, परिचय और मैथ्यू 1 है।